Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

Original Article

जनपद मिर्जापुर में 0-5 वर्ष के बच्चों की पोषण के स्थिति का विश्लेषण

प्रियंका मौर्या[1], डॉ. सुरेखा जायसवाल[2]

[1]अनुसंधानकर्ती, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संकाय, गृह विज्ञान विभाग, (महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी)

[2]शोध निर्देशिका, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, गृह विज्ञान विभाग, (महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी)

Email: pm5650811@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180311
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 3(A)
Pp. 61-65
March- 2026
Submitted: 20 Feb. 2026
Revised: 28 Feb. 2026
Accepted: 05 Mar. 2026
Published: 31 Mar. 2026

सारांश

बाल पोषण किसी भी समाज के समग्र विकास का आधार होता है, क्योंकि जीवन के प्रारंभिक पाँच वर्ष बच्चों के शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। भारत में, विशेष रूप से उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में, कुपोषण एक प्रमुख समस्या के रूप में उभर कर सामने आया है। मिर्जापुर जनपद, जो सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से अपेक्षाकृत पिछड़ा क्षेत्र है, वहाँ बच्चों की पोषण स्थिति कई चुनौतियों का सामना कर रही है। यहाँ गरीबी, अशिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं की कमी और जागरूकता का अभाव कुपोषण की समस्या को और अधिक गंभीर बना देता है।

अध्ययन के उद्देश्य - इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य मिर्जापुर जनपद में 0 से 5 वर्ष के बच्चों की पोषण स्थिति का समग्र विश्लेषण करना है। इसके अंतर्गत बच्चों में कुपोषण के विभिन्न प्रकारों की पहचान करना, लिंग एवं आयु वर्ग के अनुसार पोषण की असमानताओं को समझना तथा सरकारी योजनाओं के प्रभाव का मूल्यांकन करना शामिल है। इसके अतिरिक्त, कुपोषण के प्रमुख कारणों का विश्लेषण कर उसके समाधान के लिए सुझाव प्रस्तुत करना भी इस अध्ययन का उद्देश्य है।

अध्ययन क्षेत्र - मिर्जापुर जनपद उत्तर प्रदेश के दक्षिण-पूर्वी भाग में स्थित है, जहाँ की अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। यह क्षेत्र मुख्यतः कृषि पर आधारित है, किन्तु यहाँ सिंचाई की अनियमितता, रोजगार के सीमित अवसर तथा स्वास्थ्य एवं शिक्षा की अपर्याप्त सुविधाएँ विकास में बाधा उत्पन्न करती हैं। इन सभी कारकों का प्रत्यक्ष प्रभाव बच्चों की पोषण स्थिति पर पड़ता है, जिससे यहाँ कुपोषण की समस्या अधिक व्यापक रूप में देखने को मिलती है।

तालिका-1: 0-5 वर्ष के बच्चों की समग्र पोषण स्थिति (2025)

श्रेणी	लड़के (%)	लड़कियाँ (%)	कुल (%)
सामान्य	52	50	51
कम वजन	28	30	29
ठिगनापन	35	37	36
दुबलापन	18	20	19
गंभीर कुपोषण	7	9	8

स्रोत: बाल विकास विभाग, जनपद मिर्जापुर (2025)

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
प्रियंका मौर्या, अनुसंधानकर्ती, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संकाय, गृह विज्ञान विभाग, (महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी)

How to cite this article:
मौर्या, . प्रियंका ., & जायसवाल, . सुरेखा . (2026). जनपद मिर्जापुर में 0-5 वर्ष के बच्चों की पोषण के स्थिति का विश्लेषण. Journal of Research & Development, 18(3(A)), 61–65. https://doi.org/10.5281/zenodo.19607155

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.19607155
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

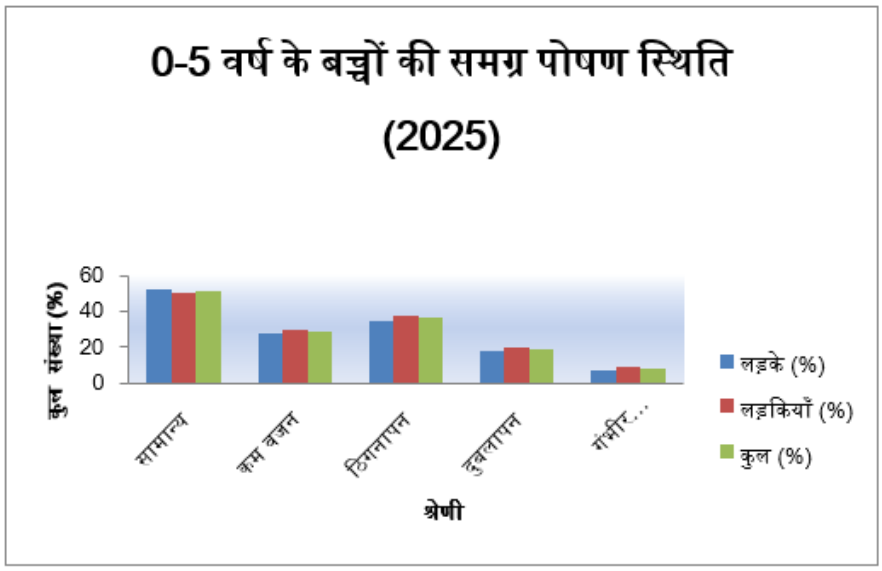

चित्र संख्या- 1

तालिका-1 से स्पष्ट होता है कि मिर्जापुर जनपद में 0 से 5 वर्ष के बच्चों की पोषण स्थिति संतोषजनक नहीं है। यद्यपि लगभग 51 प्रतिशत बच्चे सामान्य श्रेणी में आते हैं, किन्तु शेष बच्चों में कुपोषण के विभिन्न रूप स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। कम वजन की श्रेणी में 29 प्रतिशत बच्चे आते हैं, जो यह संकेत देता है कि बच्चों को पर्याप्त भोजन नहीं मिल पा रहा है। ठिगनापन, जो दीर्घकालिक कुपोषण का संकेतक है, 36 प्रतिशत बच्चों में पाया गया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि लंबे समय तक पोषण की कमी बनी रहती है। दुबलापन 19 प्रतिशत बच्चों में देखा गया, जो अल्पकालिक कुपोषण को दर्शाता है। गंभीर कुपोषण 8 प्रतिशत बच्चों में पाया गया, जो अत्यंत चिंताजनक स्थिति है। इसके अतिरिक्त, यह भी स्पष्ट होता है कि लड़कियों में कुपोषण की स्थिति लड़कों की अपेक्षा अधिक गंभीर है, जो सामाजिक असमानता और देखभाल में भेदभाव को दर्शाता है।

तालिका-2: आयु वर्ग के अनुसार पोषण स्थिति (2025)

आयु वर्ग	सामान्य	कम वजन	ठिगनापन	दुबलापन
0–1 वर्ष	60	20	15	10
1–3 वर्ष	50	30	35	20
3–5 वर्ष	45	35	40	25

स्रोतः बाल विकास विभाग, जनपद मिर्जापुर (2025)

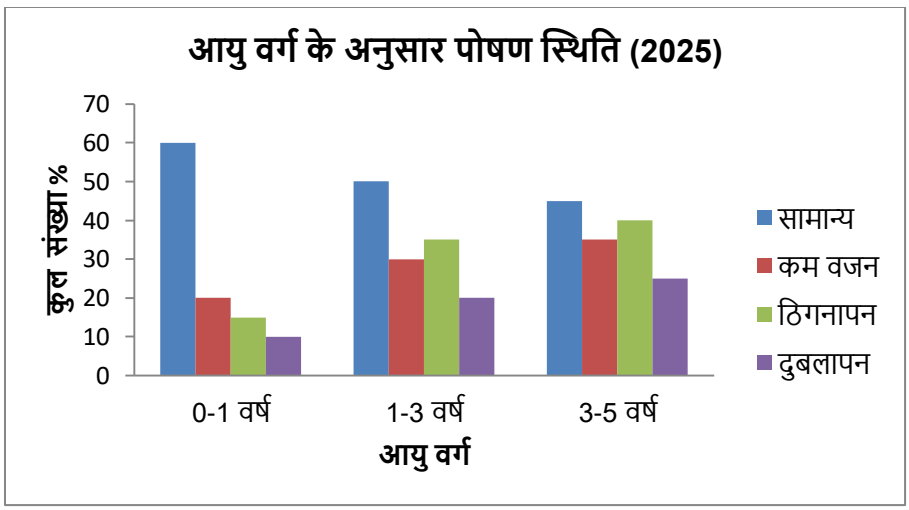

चित्र संख्या- 2

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

तालिका 2 से यह स्पष्ट होता है कि आयु बढ़ने के साथ बच्चों की पोषण स्थिति में गिरावट आती है। 0 से 1 वर्ष के बच्चों में 60 प्रतिशत सामान्य श्रेणी में हैं, जो मातृ दुग्ध के कारण बेहतर पोषण को दर्शाता है। किन्तु 1 से 3 वर्ष के आयु वर्ग में कम वजन और ठिगनापन की दर क्रमशः 30 प्रतिशत और 35 प्रतिशत तक बढ़ जाती है। 3 से 5 वर्ष के बच्चों में यह स्थिति और अधिक गंभीर हो जाती है, जहाँ केवल 45 प्रतिशत बच्चे ही सामान्य श्रेणी में हैं, जबकि 40 प्रतिशत में ठिगनापन और 35 प्रतिशत में कम वजन पाया गया है। यह इस बात का संकेत है कि पूरक आहार की कमी और पोषण संबंधी जागरूकता का अभाव बच्चों के स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है।

तालिका-3: लिंग के आधार पर कुपोषण (2025)

श्रेणी	लड़के (%)	लड़कियाँ (%)
कम वजन	28	30
ठिगनापन	35	37
दुबलापन	18	20

स्रोत: बाल विकास विभाग, जनपद मिर्जापुर (2025)

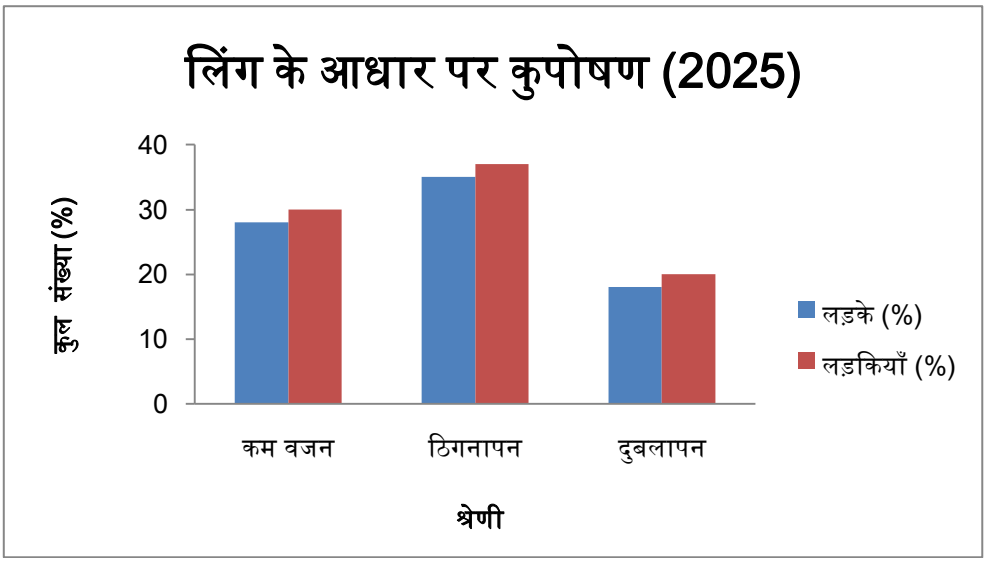

चित्र संख्या- 3

तालिका-3: के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि लड़कियों में कुपोषण की स्थिति लड़कों की अपेक्षा अधिक गंभीर है। कम वजन, ठिगनापन और दुबलापन तीनों ही श्रेणियों में लड़कियों का प्रतिशत अधिक है। यह सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारणों को दर्शाता है, जहाँ लड़कियों को पोषण एवं देखभाल में अपेक्षाकृत कम प्राथमिकता दी जाती है। यह लिंग आधारित असमानता कुपोषण की समस्या को और अधिक जटिल बनाती है।

तालिका-4: कुपोषण के प्रमुख कारण (2025)

कारण	प्रतिशत (%)
गरीबी	40
अशिक्षा	20
स्वास्थ्य सेवाओं की कमी	15
स्वच्छता की कमी	15
जागरूकता का अभाव	10

स्रोत: बाल विकास विभाग, जनपद मिर्जापुर (2025)

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

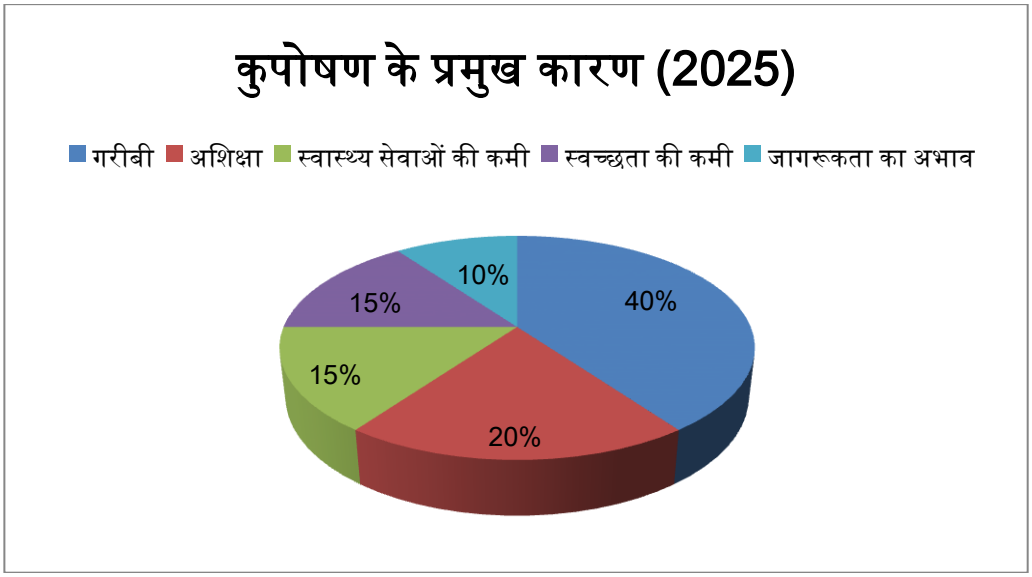

चित्र संख्या- 4

तालिका-4 से यह स्पष्ट होता है कि कुपोषण का सबसे बड़ा कारण गरीबी है, जो 40 प्रतिशत मामलों में जिम्मेदार है। इसके बाद अशिक्षा 20 प्रतिशत मामलों में एक प्रमुख कारण के रूप में सामने आती है। स्वास्थ्य सेवाओं और स्वच्छता की कमी भी 15-15 प्रतिशत मामलों में कुपोषण को बढ़ावा देती है। जागरूकता का अभाव 10 प्रतिशत मामलों में योगदान करता है। यह स्पष्ट करता है कि कुपोषण केवल भोजन की कमी का परिणाम नहीं है, बल्कि यह एक बहुआयामी समस्या है।

तालिका-5: सरकारी योजनाओं का प्रभाव (2025)

योजना	लाभान्वित बच्चे (%)	सुधार (%)
ICDS	70	25
पेषण अभियान	60	20
NHM	65	22

स्रोत: बाल विकास विभाग, जनपद मिर्जापुर (2025)

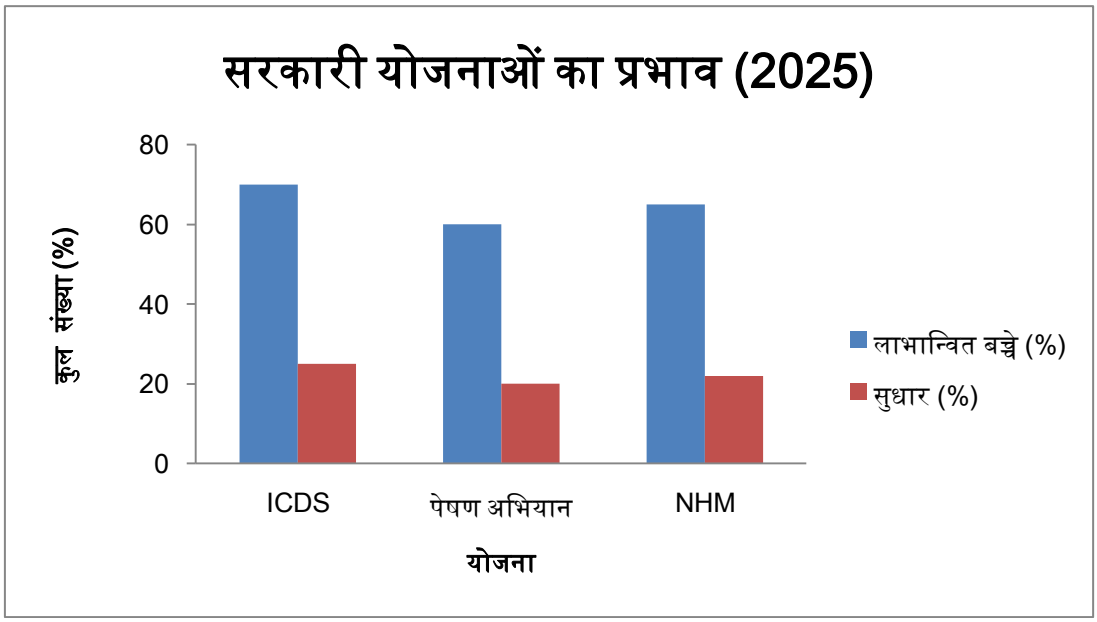

चित्र संख्या- 5

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

तालिका-5 से स्पष्ट होता है कि सरकारी योजनाओं का कुछ सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। प्ब्क्ै योजना के अंतर्गत 70 प्रतिशत बच्चे लाभान्वित हुए हैं, जिससे 25 प्रतिशत तक सुधार देखा गया है। च्व्ैभ्।छ अभियान और छश्ड के माध्यम से भी क्रमशः 20 प्रतिशत और 22 प्रतिशत सुधार दर्ज किया गया है। यह सुधार अभी भी पर्याप्त नहीं है, जो यह दर्शाता है कि योजनाओं के क्रियान्वयन में सुधार की आवश्यकता है

तालिका-6: ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में पोषण स्थिति (2025)

क्षेत्र	सामान्य	कम वजन	ठिगनापन	दुबलापन
ग्रामीण	48	32	38	22
शहरी	60	25	30	15

स्रोत: बाल विकास विभाग, जनपद मिर्जापुर (2025)

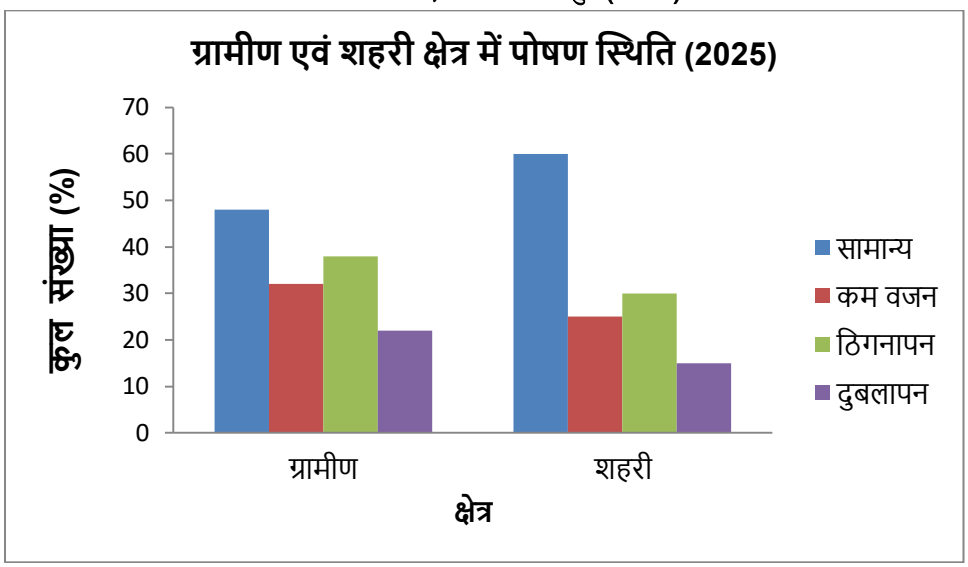

चित्र संख्या- 6

तालिका-6 से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में कुपोषण की स्थिति शहरी क्षेत्रों की तुलना में अधिक गंभीर है। ग्रामीण क्षेत्रों में केवल 48 प्रतिशत बच्चे सामान्य श्रेणी में हैं, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह संख्या 60 प्रतिशत है। कम वजन, ठिगनापन और दुबलापन तीनों ही श्रेणियों में ग्रामीण क्षेत्रों के आंकड़े अधिक हैं। यह स्वास्थ्य सेवाओं, शिक्षा और आर्थिक अवसरों की कमी को दर्शाता है।

निष्कर्ष - उपरोक्त सभी तालिकाओं और उनके विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि मिर्जापुर जनपद में 0-5 वर्ष के बच्चों की पोषण स्थिति चिंताजनक है। कुपोषण के विभिन्न रूप व्यापक रूप से विद्यमान हैं और यह समस्या विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों तथा लड़कियों में अधिक गंभीर है। अतः इस समस्या के समाधान के लिए बहुआयामी एवं समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है।

सुझाव - पोषण शिक्षा को बढ़ावा देना, आंगनवाड़ी सेवाओं को मजबूत करना, महिलाओं की शिक्षा पर जोर देना तथा स्वास्थ्य एवं स्वच्छता सुविधाओं में सुधार करना आवश्यक है, जिससे कुपोषण की समस्या को प्रभावी ढंग से कम किया जा सके।